जब आप अपने आपको वहां पाएं जहां आप होना नहीं चाहते (28:1-11)

हम पौलुस की रोम यात्रा से जीवन के सागर पर अपनी जलयात्रा की तुलना कर चुके हैं। कम से कम एक और समानता बनाई जा सकती है कि पौलुस की तरह, हम हमेशा अपने आपको वहां नहीं पाते जहां होने की हमें उम्मीद होती है।

पौलुस की रोम यात्रा को देखने के लिए मानचित्र देखें।[1] दिमाग में ही कैसरिया से (जहां से यात्रा आरम्भ हुई) रोम तक (जहां यात्रा समाप्त हुई) एक सीधी रेखा खींचें। अब उस रेखा की तुलना जहाज़ के वास्तविक मार्ग से करें: उत्तर में, तट की ओर; पश्चिम में, तट के बिल्कुल निकट जिसे आजकल तुर्की कहा जाता है; दक्षिण में, क्रेते के टापू से होकर पश्चिम में शुभलंगरबारी; (प्रेरितों 27:27) जहाज़ के ''टकराते फिरने'' के कारण (कभी उत्तर और कभी पूर्व में) मालटा के तट पर लगने तक, अन्त में दक्षिण और फिर पश्चिम में।

हम में से बहुतों के लिए जीवन कुछ ऐसा ही है। कुछ लोगों का जीवन, उनके जीवन के लक्ष्यों और उद्देश्यों को पूरा करने के लिए बिना रुकावट बढ़ने वाली सीधी रेखाओं के समान हो सकता है। अन्यों के जीवन में अनापेक्षित परिवर्तन आते-जाते रहते हैं। मेरी एक मित्र अपने जीवन साथी की मृत्यु के कारण संघर्ष कर रही है! वह उसी पर निर्भर थी और उसकी मृत्यु होने के बाद उसके लिए जीवन निर्वाह करना बहुत कठिन था। एक और मित्र ने हाल ही में लिखा, ''मैंने सोचा था कि मैं बुढ़ापे में अपने नाती-पोतों का सहारा बनूंगा, परन्तु यहां तो अपना पेट भरना मुश्किल हो रहा है और केवल अपना बोझ ही उठा सकता हूं!'' जब आप अपने आपको वहां पाएं जहां आप होना नहीं चाहते, तो आपको क्या करना चाहिए? आप क्या कर *सकते* हैं?

पौलुस ने अपने आपको मिलेतुस के टापू में पाया, जहां वह होना नहीं चाहता था। वह तो रोम में पहुंचना चाहता था (19:21)। यरूशलेम में उसकी गिरफ्तारी के बाद, प्रभु ने उसे आश्वासन दिया था कि वह रोम में गवाही देगा (23:11)। यह प्रेरित कैसर के पास

अपील करके रोम की ओर चल दिया। यात्रा के दौरान, परमेश्वर ने उससे वायदा किया था कि वह कैसर के सामने खड़ा होगा (27:24)। पौलुस को यह अपेक्षा करने का हक था कि वह राजधानी नगर रोम में हो। इसके विपरीत, उसने अपने आपको रोम से मीलों दूर एक छोटे से टापू में पाया, जब सर्दी का मौसम निकट आ रहा था और बसंत ऋतु के आने तक उसके वहां टापू से छूटने की कोई सम्भावना नहीं थी।

पौलुस ने जब अपने आपको वहां पाया जहां वह नहीं होना चाहता था तो उसने क्या किया? क्या उसने ऐसा व्यवहार किया जैसा हम में से कुछ लोग करेंगे अर्थात शिकायत करना तथा खीझना? आत्मकेन्द्रित और कठोर व्यक्ति बनना? दुखी रहना और अपने आस पास के लोगों को भी दुखी करना? आइए देखें कि पौलुस ने उस स्थिति में कैसे कार्य किया।

पाठ को व्यावहारिक बनाने के लिए, मैंने परमेश्वर का भय रखने वाली एक बुद्धिमान, दादी को खोजा जो *मुझे* सलाह देती रहेगी।[2] मैं आपका दादी रोपर[3] से परिचय करवा दूं: वह ज़्यादातर आपकी दादी की तरह दिखाई देती है; उसके चेहरे पर कुछ झुर्रियां पड़ी हुई हैं, परन्तु उसकी आंखें टिमटिमाती हैं। जीवन में उसने दुख भोगे हैं परन्तु वह जीवन में निराश नहीं हुई है। वह प्रभु से प्रेम करती है, और मुझसे भी प्रेम करती है। जब उसे मेरी चिन्ता होती है, तो उसकी आंखें चमक उठती हैं और भेदक हो जाती हैं जैसे वे मेरी आत्मा में झांक रही हों। जब मैं छोटा था, तो मैं उसकी नसीहत से प्रभावित नहीं होता था, परन्तु समय ने मुझे उसकी बात सुनना सिखा दिया है। हमारा पाठ वहीं से आरम्भ होता है जहां हमने इसे पिछले पाठ में समाप्त किया था।

''इससे भी बुरा हो सकता था''[4]
(28:1)

पौलुस थका और, हांफता हुआ समुद्र तट पर लेटा हुआ था, जबकि बचकर निकलने वाले कीचड़ से भरे तट की ओर आने की कोशिश कर रहे थे। 276 लोग भीगे हुए, भूखे, और कांप रहे, गठरी बनके मानवीय कचरे की तरह लग रहे थे जो समुद्र से उछाला गया हो। वे यह देखने के लिए मुड़े कि क्या मथ रहे सागर ने उनके जहाज़ को धीरे-धीरे पुर्ज़ा-पुर्ज़ा कर दिया।[5]

आपको क्या लगता है कि उनके मन में क्या विचार आया होगा? जहाज के स्वामी की आंखों में आंसू होंगे क्योंकि जहाज और सामान खो चुका था, परन्तु कल्पना कीजिए कि सबसे बढ़कर बचकर आने वालों ने जिनमें पौलुस भी था, जीवित रहने के लिए ही धन्यवाद किया होगा!

लूका ने इसे इस प्रकार से दर्ज किया, ''जब हम बच निकले, तो जाना[6] कि यह टापू मिलिते कहलाता है''[7] (आयत 1)। मिलिते अर्थात मालटा टापू, इटली और उत्तरी अफ्रीका के मध्य भूमध्य सागर में सिसिली के दक्षिण में अठावन मील दूर, अठारह मील लम्बा तथा आठ मील चौड़ा ऊबड़-खाबड़ एक छोटा सा टापू है। इसे फीनिके के व्यापारियों ने

बनाया था, परन्तु 218 ईस्वी में यह रोमी शासन के अधीन आ गया था। ''मिलेतुस अर्थात मालटा'' का कनानी भाषा में अर्थ ''आश्रय'' था; यह नाम शायद फीनिके के नाविकों द्वारा दिया गया था जिन्हें इस टापू पर आश्रय मिला था।[8] अब पौलुस और उसके सहयात्रियों को इस टापू में आश्रय मिला था।

इस दृश्य को देखकर मुझे अपने पास खड़ी दादी रोपर का विचार आता है, जिसने ठण्ड से बचने के लिए अपने कंधों पर एक छाल ओढ़ रखी है। ''डेविड, उन कांप रहे शरणार्थियों की ओर देख,'' कहती है, ''देखना कि यह जो कुछ होता है, इससे भी बुरा हो सकता है। पौलुस और दूसरे लोगों को ठण्ड लग रही है, वे गीले हैं और थक चुके हैं, परन्तु वे मर भी सकते थे!'' वह जानती है कि मुझे इसकी आवश्यकता है क्योंकि मैं निराश होने लगता हूं।

जब हम अपने आपको वहां पर पाएं जहां हम वास्तव में होना नहीं चाहते, तो हमें अपने व्यवहार पर काम करना चाहिए। ''हर जगह आप अपनी स्थिति का चयन तो नहीं कर सकते, परन्तु आप अपने व्यवहार का चयन कर सकते हैं।''

''उज्ज्वल पक्ष की ओर देखें'' (28:2)

मालटा के टापू के समुद्र तट के आस-पास वर्षा से हुई सफाई को देखते हुए हम पाते हैं कि जहाज के टूटने के शिकार लोग अकेले नहीं हैं। किसी ने टापू पर उस जहाज को किनारे लगा दिया है और शोर मचा देता है। तैरकर या बहकर किनारे तक आने वालों के लिए एक स्वागतकर्त्ता कमेटी मिलती है।

लूका ने लिखा, ''और उन जंगली लोगों ने हम पर अनोखी[9] कृपा[10] की; क्योंकि मेंह के कारण जो बरस रहा था और जाड़े के कारण उन्होंने आग सुलगाकर हम सब को ठहराया'' (आयत 2)। यह अक्तूबर के अन्त या नवम्बर के आरम्भ का समय था। भूमध्य सागर के उस भाग में उस समय का तापमान 10°F (50°C) अर्थात किसी भीगे हुए, थके हुए और वर्षा में खड़े व्यक्ति के लिए बहुत ही ठण्डा था। ''पानी से भीगे हुए लोग जो अभी-अभी दो सप्ताहों तक हवा के रोलर-कोस्टर[11] से झूले ले कर आए थे, उन्हें भावनात्मक और शारीरिक रूप से आग का ताप कितना अच्छा लग रहा होगा।''

वहां के लोगों की कृपा ''अनोखी'' थी क्योंकि वे लोग समुद्री डाकू थे और जहाज़ों के डूबने की प्रतीक्षा करते थे और इसका शिकार हुए लोगों को अपना शिकार बनाते थे: कई बार वे उनकी हत्या भी कर देते थे; कई बार वे उन्हें दास बना लेते; उन्हें लूट कर डूबे हुए जहाज का सामान वे हमेशा चुराते थे। इन लोगों के लिए कितना सुखद आश्चर्य होगा कि मिलेतुस के लोगों ने उनके साथ इतने सत्कार से व्यवहार किया था!

वहां के स्थानीय लोगों को KJV के बारबेरियन की तरह हमारी हिन्दी बाइबल के अनुवाद ''जंगली'' है (आयत 4; आयत 2 भी देखिए), इसलिए मैंने उस जहाज़ का स्वागत करने वाले लोगों को एक बार स्नेही वहशी कहा था। KJV बाइबल में यहां पर सही

अनुवाद है, क्योंकि यूनानी शास्त्र में बारबरोय है, परन्तु आज ''बारबेरियन'' शब्द गलत प्रभाव छोड़ता है। ''यूनानियों की नज़र में, बारबेरियन वह व्यक्ति होता था जो *बार-बार* कहता था अर्थात, ऐसा व्यक्ति जो सुन्दर यूनानी भाषा नहीं बल्कि समझ में न आ सकने वाली विदेशी भाषा बोलता था।''[12] लूका के दिनों में, ''बारबेरियन'' शब्द का अर्थ आज की तरह असभ्य, अशिष्ट, या भोला भाला नहीं था; इसका अर्थ केवल वह व्यक्ति था जो अपनी स्थानीय भाषा बोलने को प्राथमिकता देता था। वास्तव में, रोमी राज्य के सिसली क्षेत्र के रूप में, मिलेतुस बहुत ही सभ्य था। ''पौलुस के दिनों में यह टापू समृद्धि एवं घरेलु वास्तुकला के लिए प्रसिद्ध था।''[13] NIV का पदनाम ''आइलैंडर्स अर्थात टापू पर रहने वाले'' उन लोगों की अच्छी व्याख्या है जिन्होंने पौलुस और जहाज में उसके साथियों का बड़ी कृपा से स्वागत किया।

मैं उन स्नेही तथा चिन्तित टापू निवासियों के पास, उस बड़ी आग के पास जो आकाश तक ऊपर उठ रही है, और बचकर आने वाले भीगे हुए लगभग तीन सौ लोगों को सुखा सकती है, खड़ा हूं। इस जहाज़ के लोग बहुत देर से गीले या ठण्डे होंगे।

मैं दादी रोपर को अपनी ओर आग करते हुए महसूस करता हूं। जब मैंने उसकी ओर ध्यान दिया, तो वह कहती है, ''मेरा अन्तिम सुझाव ले ले: जब कठिनाई आती है, तो न केवल यह सत्य है कि यह और भी बुरी हो सकती है; बल्कि यह भी सत्य है कि यदि तुम डटे रहो, तो तुम्हें उस स्थिति से कुछ अच्छा भी मिल सकता है।'' अपने हाथ आग की ओर करते हुए, वह मुस्कुराती हुई कहती है, ''उदाहरण के लिए, तुम्हें यह मानना ही पड़ेगा कि यह आग कितनी अच्छी लग रही है।''

फिर से उसने मेरे मन की एक दुखती रग पर हाथ रख दिया। मैं उज्ज्वल पक्ष की ओर देखने के बजाय परिस्थितियों के अन्धेरे पक्ष की ओर देख रहा हूं। जब मेरे जीवन में चुनौतियां आती हैं, तो मैं उन्हें अवसरों के बजाय समस्याओं के रूप में अधिक देखता हूं। (एक बार एक सहकर्मी ने मुझसे कहा, ''डेविड, सकारात्मक सोच रखो!'' और मैंने उत्तर दिया, ''मैं ऐसा ही करता हूं; मैं इस बारे में सकारात्मक हूं कि यह काम विपत्ति लाने वाला है!'')

''इसका अधिक से अधिक लाभ लें'' (28:3)

दादी की नसीहत के बारे में सोचता हुआ मैं ध्यान देता हूं कि लोग लकड़ी को लाने के लिए जंगल में दौड़े जा रहे हैं, जिसे वे आग में डालते हैं। आग को जलाए रखने के लिए उसमें थोड़ी-थोड़ी देर बाद लकड़ी डालते रहना आवश्यक है, वरना यह शीघ्र ही बुझ जाएगी।[14] *दादी रोपर आग मेरी ओर करती है (मेरी पसलियां दुखने लगी हैं) और आग इकट्ठी करने वालों में से एक अर्थात प्रेरित पौलुस की ओर इशारा करती है।*

''पौलुस ने लकड़ियों का गट्ठा बटोरकर आग पर रखा'' (आयत 3क)। विलियम बार्कले ने कहा है, ''पौलुस ऐसा आदमी था जो आराम से नहीं बैठ सकता था उस अलाव

को प्रज्वलित रखना आवश्यक था। और पौलुस इसके लिए झाड़-झंखाड़ इकट्ठा कर रहा था।'' जे. डब्ल्यू. मैक्गार्वे ने टिप्पणी की, ''पौलुस किसी आधुनिक प्रचारक के जैसा आदमी नहीं था, जो अपने हाथों से एक घरेलू नौकर का काम नहीं करता, और जो हर किसी से अपेक्षा करता है कि उसकी शान बनाने के लिए हर कोई उसकी सेवा करे।''[15] इस प्रेरित ने जीवन भर अपने हाथों से काम किया था (20:34); वह इतना बड़ा नहीं बना था कि आग जलाने के लिए लकड़ियां इकट्ठी कर पाता। ''परमेश्वर के दास के लिए जिसमें 'मसीह का मन' है कोई भी काम छोटा नहीं है (फिलिप्पियों 2:1-13)।''[16]

दादी मां मेरे कानों में कहती है, ''तुझे इससे क्या सीख मिली?'' मैं कुछ देर के लिए सोचता हूं और फिर उत्तर देता हूं, '' 'इतने बड़े' मत बनो कि छोटे काम न कर सको?'' दादी मुस्कुराती है। ''बिल्कुल ठीक। परन्तु मैं चाहती हूं कि तुम इसे वहां पर लागू करो जहां पर तुम होना नहीं चाहते। क्या पौलुस स्थिति के सुधार की प्रतीक्षा में बैठा कुछ नहीं कर रहा था, या उसने वह किया जो परिस्थितियों को बेहतर बनाने के लिए वह कर सकता था?''

मुझे उत्तर देने में कोई कठिनाई नहीं है, क्योंकि इसका उत्तर तो, मेरे अपने जीवन पर प्रासंगिक होने के कारण स्पष्ट है। कई बार मैंने किसी परिस्थिति को बेहतर बनाने के लिए कुछ करने के बजाय केवल शिकायत ही की है। दादी यह सुनिश्चित करती है कि मुझे समझ आ गई, परन्तु, उसके यह कहने पर कि: ''किसी ने कहा है, 'अन्धेरे को कोसने के बजाय दीया जला देना अधिक अच्छा है।' '' मैं सिर हिलाकर सहमति जताता हूं।

''हताश न हों''[17] (28:3-6)

हमारी बातचीत ज़ोर की एक आवाज होने से रुक जाती है। भय से भरी सभी आंखें इस प्रेरित पर टिक गई हैं। एक विषैला सर्प उसके हाथ से चिपक गया है[18] *(आयत 3)।*

सर्दी के कारण, यह सांप लकड़ी के उस ढेर पर सो रहा था जिसे पौलुस ने आग जलाने के लिए उठाया था।[19] आग के ताप से इस सर्प में जान आ गई थी और यह पौलुस पर चढ़ गया था। अब यह अजीब तरह से उसके हाथ से लटक गया था, अर्थात इसके विषैले दांत उसके मांस में धंस गए थे।[20]

दादी मां मेरे कान में कहती है: ''जब तुम अपने आपको वहां पर पाओ जहां तुम नहीं होना चाहते, तो कई बार तो परिस्थितियां सुधरने से पहले और बिगड़ जाती हैं।'' मुझे पता था कि उसके कहने का क्या अर्थ था। सम्भवत: आप भी जानते हैं।

हम देखते हैं कि पौलुस के लिए आग के आस-पास बुड़बुड़ करने से परिस्थिति और ख़राब हो रही है। टापू निवासी सभ्य हैं, परन्तु उनके दिमाग़ में मूर्तिपूजकों के अन्धविश्वासों ने घर बना रखा है। पौलुस के हाथ से लिपटे हुए सांप को देखकर ये लोग एक दूसरे से यह कहने लगते हैं, ''सचमुच यह मनुष्य हत्यारा है, कि यद्यपि समुद्र से बच गया, तौभी न्याय ने[21] *जीवित रहने न दिया''(आयत 4)।*

किसी तरह, उन्हें पता चल गया था कि पौलुस एक कैदी था।[22] उसे सांप द्वारा काटने

पर उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि उसने अवश्य ही कोई गंभीर अपराध किया होगा जिस कारण देवताओं ने उसे दण्ड देने के लिए इतना ज़हरीला सांप भेजा।[23]

भयभीत होकर, मैं पौलुस की ओर ताकने लगता हूं। मुझे सांप अच्छे नहीं लगते, चाहे वे ज़हरीले हों या न हों! यदि मुझे किसी सांप ने काटा होता, तो शायद मैं ऐसे उछलने लगता जैसे मेरे शरीर में ज़हर डालने के लिए मेरी नसों से गुर्दों में विष पहुंचा दिया गया हो। कितनी हैरानी की बात है, कि पौलुस ने बड़े आराम से उस जीव को आग में झटक दिया (आयत 5क)।

यीशु ने सत्तर मसीहियों को भेजते हुए, उनसे कहा था, ''देखो, मैंने तुम्हें सांपों और बिच्छुओं को रौंदने का ... अधिकार दिया है; और किसी वस्तु से तुम्हें कुछ हानि न होगी'' (लूका 10:19)। जी उठने के बाद सब जातियों में सुसमाचार सुनाने की आज्ञा देकर उसने प्रेरितों के साथ प्रतिज्ञा की थी कि, ''और विश्वास करनेवालों में ये चिह्न होंगे कि वे मेरे नाम से ... सांपों को उठा लेंगे'' (मरकुस 16:17, 18क)।[24] पौलुस ''प्रेरित के लक्षण'' अर्थात चिह्नों में से केवल एक ही दिखा रहा था (2 कुरिन्थियों 12:12क)।

पौलुस को अभी तक ''कुछ हानि न पहुंची'' (आयत 5ख) थी, परन्तु टापू के लोगों को अभी भी लगता था कि किसी भी पल ''वह सूज जाएगा,[25] या एकाएक गिरके मर जाएगा'' (आयत 6क)।[26] बहुत देर तक प्रतीक्षा करके जब उन्होंने देखा कि उसे कुछ भी नहीं हुआ, तो उन्होंने अपनी सोच बदल ली ''विचार कर कहा; यह तो कोई देवता है'' (आयत 6ख)।

लोग एक सिरे से दूसरे सिरे तक झूलते हैं! मैकग्वे ने इसे ''लुस्त्रा पलट गया'' कहा।[27] परन्तु यहां पर पौलुस यह कहकर कि ''मैं भी तो तुम्हारी तरह दुख-सुख भोगी मनुष्य हूं!'' (देखिए 14:15) शायद इसलिए नहीं चिल्लाया कि वहां लुस्त्रा की तरह उसकी उपासना करने का कोई प्रयास नहीं हुआ था। लोग उसे देवता कहें या हत्यारा पौलुस ने उनकी बातों पर गुस्सा नहीं किया।

वह ज़हरीला सांप सम्भवत: रोम पहुंचने से पौलुस को रोकने का शैतान का अन्तिम प्रयास था; ''उस पुराने अजगर'' (प्रकाशितवाक्य 12:9) ने पहले भी अपने लक्ष्य को पाने के लिए सांप का इस्तेमाल किया था (उत्पत्ति 3)। परन्तु इस घटना को परमेश्वर ने अपने उद्देश्य के लिए इस्तेमाल कर लिया। जहाज़ के सब लोगों को उसने दिखा दिया था कि ''पौलुस को परमेश्वर का संदेश देकर स्वर्ग से भेजा ही नहीं गया बल्कि स्वर्ग से उसकी रक्षा भी की गई।''

इससे पहले कि दादी मां बोल पाए मैं तैयार हूं: ''इससे यह पता चलता है कि परमेश्वर हमारी रक्षा करेगा।'' वह मुस्कुराती है। ''बिल्कुल सही-बेशक जरूरी नहीं कि वह हमारी रक्षा वैसे ही करे जैसे उसने पौलुस की की थी-परन्तु मैं तुम्हें समझाना चाहती हूं कि पौलुस ने स्थिति को कैसे सम्भाला। सांप का काटना हो, बुरी-बुरी बातें हों या कोई धोखा, वह निराश नहीं हुआ। जब आप अपने आपको वहां पाएं जहां आप नहीं होना चाहते तो यह एक मूल्यवान सम्पत्ति है।'' मैं एकदम उसकी तरफ देखता हूं। यदि उसने

मुझे कल आवश्यकता से अधिक उत्तेजित होते देखा होता, जब कोई काम मेरी इच्छा के अनुसार नहीं हुआ था? अवांछित परिस्थितियों को सम्भालने के लिए मुझे अभी बहुत कुछ सीखना है।

''इतने घमण्डी न बनें कि किसी की सहायता न ले सकें'' (28:7)

परमेश्वर के पूर्व प्रबन्ध में, जहां पर पौलुस और बाकी लोगों को किनारे पर फैंका गया था वह स्थान मालटा पर सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति की सम्पत्ति के करीब था। लूका ने कहा, ''उस जगह के आस पास पुबलियुस नामक उस टापू के प्रधान[28] की भूमि थी'' (आयत 7क)। पुबलियुस रोम द्वारा नियुक्त मालटा का राज्यपाल था।

वहां के कुछ लोग तो आग में लकड़ियां डाल रहे थे, जबकि दूसरे लोग जहाज़ में बचे लोगों को ठहराने का प्रबन्ध करने के लिए दौड़ भाग कर रहे थे। पौलुस, लूका और शायद दूसरे लोगों को[29] कोई प्रबन्ध होने तक अपने घर में बुलाकर राज्यपाल पुबलियुस ने एक उदाहरण प्रस्तुत किया। राज्यपाल उन्हें अपने घर में बुलाकर मित्र भाव से उनका स्वागत करता है (आयत 7ख)।[30] अब दृश्य तूफान से साफ हुए समुद्र के किनारे से हटकर राज्यपाल के निवास के एक आरामदेह कमरे में चला जाता है।

''यह बिल्कुल ऐसा ही है!'' दादी अपनी शॉल से पानी को हिलाते हुए मेरी ओर देखकर फिर कहती है: ''देखो पौलुस पुबलियुस के साथ भोजन कर रहा है, कई हफ्तों के बाद उसे आज गर्मा गर्म खाना मिला है। यह भी ध्यान दें कि पौलुस दृढ़ निश्चय वाला और स्वतन्त्र व्यक्ति तो था, फिर भी वह सहायता स्वीकार करना चाह रहा था। उसने टापू के लोगों द्वारा जलाई गई आग से अपने आपको गर्म किया था, और अब उसने राज्यपाल के आतिथ्य को भी स्वीकार कर लिया है। जब तुम अपने आपको वहां पाओ जहां तुम नहीं होना चाहते, तो तुम्हें चुनौती का सामना करने के लिए किसी की भी सहायता की आवश्यकता पड़ सकती है। इतने घमण्डी न बनो कि किसी की सहायता को स्वीकार न कर पाओ।''

मुझे इस छोटी सी सलाह पर खुश होना पड़ेगा क्योंकि दादी मां उन सब लोगों की तरह ही स्वतन्त्र है जिन्हें मैं जानता हूं, परन्तु मैं जानता हूं कि उनके कहने का क्या अर्थ है। मैं यह मानने के लिए तैयार नहीं हूं कि मैं किसी भी समस्या से अपने आप नहीं निपट सकता। अपने आप पर भरोसा रखना बुरी बात तो नहीं है; इस संसार में बहुत से लोग दूसरों की कोशिशों के सहारे जीकर प्रसन्न रहते हैं। परन्तु, जब लगे कि मैं अपने आप कुछ नहीं कर सकता तो किसी की सहायता लेने से इन्कार करना सबसे बड़ी मूर्खता है।[31]

''इतने स्वार्थी न बनें कि किसी की सहायता न कर सकें'' (28:8)

हम थोड़ा आगे हो जाते हैं ताकि खाने की मेज पर हो रही बातचीत को सुन सकें। हमें लगेगा कि पौलुस अतिथियों को तूफान और जहाज़ के टूटने की बात स्वाद ले लेकर

बताएगा। इसके बजाय, वह अपने मन का बोझ हल्का करके अपने मेजबान की बात पर ध्यान लगाता है।

इस प्रेरित को पता चलता है कि पुबलियुस का पिता बिस्तर पर ज्वर और (पेचिश) से पीड़ित पड़ा है[32] *(आयत 8क)। जल्दी से मेज़ छोड़कर, पौलुस उसे देखने के लिए भीतर जाता है (आयत 8ख)। वह उस पीड़ित आदमी को देखता है, फिर परमेश्वर से सहायता मांगने के लिए घुटनों के बल होकर प्रार्थना करता है। यह जानकर कि परमेश्वर उस आदमी को चंगा करना चहता है, वह उस पर अपने हाथ रखकर*[33] *उसे चंगा कर देता है (आयत 8ग)। वह पुबलियुस और बाकी परिवार को बुलाता है (देखिए 9:41)। परिवार कितना आनन्दित होता है!*

दादी मां अपने आंसू पोंछती है। बूढ़े लोगों के साथ पौलुस का कोमल व्यवहार उसे अच्छा लगता है। वह मुझसे पूछती है, ''तूने देखा कि पौलुस ने कैसे दया के बदले दया दिखाई!'' मैं अपना सिर हां में हिलाता हूं। वह कहना जारी रखती है, ''जब पौलुस ने अपने आपको वहां पर पाया जहां वह नहीं होना चाहता था, तो वह अपनी दयनीय हालत पर स्थिर नहीं रहा। उसने अपने आपको अकेला नहीं किया। बल्कि, वह किसी और व्यक्ति के पास गया। कोई बेचारा–मैं यहां उसकी सहायता करने के लिए हूं'' मैं फिर सिर हिलाता हूं। मैं जानता हूं कि वह जो कहती है सही है। मैं यह भी जानता हूं कि अपने ऊपर भरोसा रखने से आदमी स्वार्थी बन सकता है क्योंकि मैंने इसे अपने जीवन में अनुभव किया है और दूसरों में देखा है। शर्मसार होकर मैं प्रार्थना करता हूं, ''हे परमेश्वर, दूसरों की आवश्यकताओं के प्रति और संवेदनशील होने में मेरी सहायता कर।''

''परमेश्वर के पास एक कारण है'' (28:9)

उस छोटे से टापू में चमत्कारी चंगाई की बात फैलने में देर नहीं लगी। शीघ्र ही, उस टापू पर दूसरे रोगी आने लगते हैं और चंगे हो जाते हैं (आयत 9)।[34]

आयत 9 के अनुवादित शब्द ''चंगे किए गए'' आयत 8 के अनुवादित शब्द ''चंगा किया'' से भिन्न हैं; आयत 9 के शब्द ''चंगे किए गए'' का अर्थ ''दवाइयां देकर उपचार करना'' हो सकता है।[35] इस तथ्य को मिलाकर कि टापू के लोगों के लिए लूका भी सम्माननीय लोगों में था (आयत 10), यह अनुमान लगाया जाता है कि पौलुस के एक तरफ लूका भी सेवा करता था: लूका अपनी दवाइयों से, और पौलुस अपने आश्चर्यकर्मों से। बार्कले ने सुझाव दिया है कि इस पद से हमें ''एक *मेडिकल मिशनरी* के कार्य की आरम्भिक तस्वीर'' मिल सकती है।

परन्तु, आइए मालटा पर तीन महीनों के दौरान पौलुस के काम पर ध्यान देते हैं। लूका ने यह नहीं लिखा कि पौलुस ने प्रचार किया, परन्तु इसकी कल्पना करना कठिन है कि उसने प्रचार न किया हो। परमेश्वर ने जहाज़ से आने वाले लोगों को पौलुस के द्वारा उनके प्राण बचाकर तैयार किया था कि पौलुस उसका प्रचारक है; टापू पर रहने वाले लोगों के हृदयों को उसने पौलुस को सांप से बचाकर और चंगाई देने की शक्ति देकर तैयार किया

था। परमेश्वर कभी किसी अवसर को व्यर्थ नहीं जाने देता।[36] पौलुस ने चंगाई यीशु के नाम से दी थी (19:13); चंगा होने वाले के लिए यह बताना कितना स्वाभाविक है कि जिस यीशु ने उसे शारीरिक चंगाई दी है वही उन्हें आत्मिक चंगाई भी दे सकता है![37] बाइबल से बाहर की परम्परा के अनुसार पौलुस ने मालटा के टापू में सुसमाचार का प्रचार किया, और उसके जाने के बाद कलीसिया वहां पुबलियुस के घर में इकट्ठी होती थी। मैं कम से कम इस परम्परा के पहले भाग में तो विश्वास कर ही लेता हूं।[38] शायद पौलुस उनमें से कुछ लोगों के पास भी गया जो उसके साथ जहाज़ में थे। मैं विशेष रूप से रोम में मृत्यु दण्ड पाए कैदियों पर विचार करता हूं[39] जो अपने मनों में उम्मीद लेकर गए होंगे।

मैं निष्कर्ष निकालता हूं, ''पौलुस चाहे वहां नहीं था जहां वह होना चाहता था, फिर भी उसने प्रभु के लिए अर्थ पूर्ण कार्य ढूंढ़ ही लिया।'' दादी मां मुझे शब्दों का एक धक्का मारकर कहती है: ''फिर?'' मैं कहता हूं, ''फिर, हम भी ऐसा कर सकते हैं।'' मुझे यह कथन अच्छा लगता है: ''जहां आप चाहते हैं वहां आप हमेशा नहीं हो सकते, परन्तु यदि आप वहां पर परमेश्वर की इच्छा को पूरा करते हैं, तो आप वहां होंगे जहां आपको होना चाहिए।'' शब्दों का एक और धक्का: ''सो?'' मैं आगे कहता हूं, ''सो, जब हम अपने आपको वहां पाएं जहां हम नहीं होना चाहते, तो हमें याद रखना चाहिए कि हमें वहां रखने का परमेश्वर के पास अवश्य कोई कारण है, और हमें इस बात पर विचार करना चाहिए कि परमेश्वर ने हमें वहां क्यों रखा है। यह भी सम्भव है कि परमेश्वर ने अपने दिमाग में हमारे लिए उस जगह जहां हम नहीं होना चाहते और भी बड़ी सेवकाई तैयार रखी हो।'' इन दो लम्बे वाक्यों से मेरी सांस फूलने लगती है और दादी खुश हो जाती है। वह कहती है, ''बहुत अच्छा।''

''परमेश्वर आपकी रक्षा करेगा'' (28:10,11)

मालटा नामक टापू पर तीन महीने का समय बहुत जल्दी बीत गया। लूका ने लिखा ''और उन्होंने हमारा बहुत आदर किया'' (आयत 10क)। यूनानी में प्रयुक्त इन शब्दों का अर्थ ''दक्षिणा''[40] भी हो सकता था, परन्तु यह विश्वास करना कठिन है कि पौलुस ने अपने प्रयासों के लिए धन स्वीकार किया हो। सम्भवत:, लूका टापू के निवासियों के मन में पौलुस और यीशु के दूसरे अनुयायियों के प्रति बढ़ते सम्मान को बताना चाह रहा था (देखिए 2:42)।,

उन महीनों के दौरान, सूबेदार ने सिकंदरिया का एक और मालवाहक जहाज लगा दिया (28:11) जो सम्भवत: सर्दी के मौसम में मालटा के मुख्य नगर और राजधानी वलेटा की बन्दरगाह पर खड़ा था। उस जहाज ने उन्हें इटली ले जाना था।

अन्त में, पौलुस और बाकी लोगों के जाने का समय आ गया। मालटा पहुंचने के समय पौलुस वहां था जहां वह नहीं होना चाहता था; तीन महीनों के बाद, उसके लिए अपने आपको उनसे जुदा करना बड़ा कठिन हो गया था। सब कुछ तूफान में खो चुका था; पहले किनारे पर आने के समय पौलुस और उसके साथियों के पास गीले कपड़ों के

अलावा कुछ नहीं था। अब नये मित्र उसे और उसके साथियों को रोम जाने के लिए सारी आवश्यक सामग्री दे रहे थे। लूका ने विदाई की उस तस्वीर को एक स्पष्ट आघात के साथ रंगा है: ''और जब हम चलने लगे, तो जो कुछ हमें अवश्य था, जहाज पर रख दिया'' (आयत 10ख)।

मैं चाहता हूं कि दादी हमारी इस बातचीत को समाप्त करे। वह मुझे यह कहकर हैरान कर देती है कि ''तू इसे पूरा कर।'' वह पौलुस, और लूका के आस-पास प्रार्थना के लिए झुके हुए झुण्ड की ओर इशारा करके (देखिए 21:5) कहती है, ''तूने इससे क्या सीखा?'' मैं अपने विचारों को इकट्ठा करके उन्हें अंगुलियों पर गिनने लगता हूं: ''(1) यदि आप अच्छा आचरण बनाए रखो, तो जहां आप नहीं होना चाहते वहां पर होकर भी आपके साथ अधिक बुरा नहीं होगा। (2) आप व्यस्त रहते हैं, तो समय जल्दी से बीत जाएगा। (3) यदि आप अपने बजाय दूसरों के बारे में सोचते हैं, तो आपके इतने मित्र बन जाएंगे जितने आप सोच भी नहीं सकते। (4) जहां आप नहीं चाहते वहां होने पर भी यदि आप परमेश्वर के निकट रहें, तो वह वहां भी आपको वैसे ही आशीष दे सकता है जैसे वहां जहां पर आप होना चाहते थे।'' दादी के चेहरे पर एक बड़ी हंसी आती है। ''ऐसे ही किया कर, डेविड और एक दिन तू प्रचारक बन सकता है।''

उत्साह की इस बात के साथ मैं कुछ देर के लिए दादी रोपर से ''अलविदा'' कहता हूं। उम्मीद है कि आप दादी के साथ मेरी बातचीत सुन रहे थे; मेरी प्रार्थना है कि आप उसकी बातों को अपने जीवन में अपनाएं।

सारांश

कभी न कभी आप अपने आपको वहां पर *पाएंगे* जहां आप होना नहीं चाहते। जब आप वहां हों, तो उस स्थिति का अधिक से अधिक लाभ लेने और उस पर भरोसा रखने में परमेश्वर आपकी सहायता करे![41]

जिस जगह की हमने बात की है वह जगह (या स्थिति या परिस्थिति) ऐसी है जिस पर आपका कोई वश नहीं चलता है। परन्तु कई बार आप अपने आपको वहां पाएंगे जहां आप होना नहीं चाहते और फिर भी आप उसके बारे में कुछ कर *सकते* हैं। ऐसा होने पर घबराकर शिकायत न करें बल्कि जो कुछ करना आवश्यक है, वही *करें* !

सबसे भयानक जगह अगर हो सकती है तो वह *परमेश्वर से* दूर होना है (यशायाह 59:1, 2)। यह ऐसी स्थिति है जहां होने की आपको इच्छा *नहीं होनी चाहिए,* क्योंकि यदि आप वहां मर जाते हैं, तो उसके बाद तो नरक की आग में ही जाएंगे जहां आप *होना नहीं* चाहेंगे, परन्तु उस समय परमेश्वर की ओर लौटने में बहुत देर हो चुकी होगी! शुभ समाचार यह है कि यही वह स्थिति है कि यदि आप अधिक देर न करें तो उसके बारे में आप अब भी कुछ कर *सकते* हैं। यदि आप आत्मिक रूप से अपने आपको वहां पाएं जहां आप नहीं होना चाहते तो? प्रभु पर भरोसा करके अपने पापों से मन फिराएं और उसकी ओर लौट आएं![42] वह आपको छुड़ा सकता है और छुड़ा लेगा!

प्रवचन नोट्स

मालटा के टापू पर पौलुस के जहाज के डूबने की कहानी जिसका शीर्षक ''कुछ लोग एक अजनबी के साथ दया दिखाते हैं'' हो सकता था, बच्चों की क्लासों की पसन्दीदा कहानी है। इस अध्याय पर आधारित ''पहुनाई की उत्तम कला'' शीर्षक से एक अतिरिक्त प्रवचन *ट्रुथ फॉर टुडे* के अगले भाग में मिलेगा।

पाद टिप्पणियां

[1]पृष्ठ 191 पर मानचित्र देखिए। [2]इस पाठ में दिए गए कई परामर्श मुझे हैरानी में डालते हैं कि जब हम अपने आप पर शर्मिंदा होते हैं तो परमेश्वर का भय मानने वाली बुद्धिमान दादी कितनी अच्छी सलाह दे सकती है। [3]दादी के लिए कोई दूसरा प्रसिद्ध पारिवारिक नाम दिया जा सकता है। मेरी पत्नी अपने नातियों की ''नानी'' है। बेशक यदि आप काल्पनिक दादी के इस विचार का प्रयोग करते हैं, तो आप *अपने* नाम को जोड़ लें। [4]इस पाठ के अधिकतर शीर्षक बोलचाल की भाषा से ही हैं; उनमें से कइयों को लोकोक्तियों के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है। आप अपने क्षेत्र के हिसाब से उन्हें इस्तेमाल कर सकते हैं। स्थानीय लोकोक्तियों में अलग-अलग शब्दों में उन्हीं बातों को व्यक्त किया जा सकता है। [5]अन्तिम दो वाक्यों के शब्द चार्लस आर. स्विंडोल, *द स्ट्रेन्थ ऑफ एन एगज़ेक्टिंग पेशन* से लिए गए हैं। [6]उन्होंने उस भूखण्ड को निकट से जांचकर ''जाना'' होगा, परन्तु सम्भवत: उन्हें मिलने वाले वहां के निवासियों से पता चला होगा। [7]''मिलिते'' मूल शास्त्र के शब्द *मिलाइट* का लिप्यान्तरण है। आज इस टापू को मालटा के नाम से जाना जाता है। (मालटा का देश तीन स्थाई टापुओं तथा दो अस्थाई विशाल चट्टानों से बनता है। स्थाई टापुओं में से सबसे बड़े को मालटा के नाम से भी जाना जाता है।) [8]लूका कह रहा होगा, ''हम समझ गए हैं कि आश्रय के इस टापू का नाम ठीक ही रखा गया था!'' [9]यूनानी शास्त्र में मूलत: ''असाधारण'' है। [10]अनुवादित शब्द ''कृपा'' उस यूनानी शब्द का क्रिया रूप है जिससे हमें अंग्रेज़ी का शब्द ''फिलन्थ्रोपी'' मिला है जिसका अर्थ है ''मनुष्य जाति से प्रेम करने वाला।''

[11]रोलर कोस्टर मनोरंजन पार्कों में पाया जाने वाला एक झूला है जो पहाड़ियों और मोड़ों पर बड़ी तेजी से घूमता है। [12]विलियम बार्कले, *द ऐक्ट्स ऑफ द अपोस्टल्ज़,* द डेली स्टडी बाइबल, rev. ed. [13]रिचर्ड एन. लॉन्गनेकर, ''द ऐक्ट्स ऑफ द अपोस्टल्ज़,'' *द एक्सपोज़िटर'ज़ बाइबल कमैन्ट्री,* ed., *फ्रैन्क ई. गैबलेन,* vol. 9. (आज मालटा की 96 प्रतिशत जनसंख्या साक्षर है, जो संसार के सबसे अधिक साक्षर देशों में से एक है।) [14]बारिश में लकड़ी को जलाने के लिए कुछ विशेष चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। आग को जलाए रखने के लिए उसमें लकड़ियां डालते रहना पड़ता है ताकि बारिश से आग बुझ न जाए और तेज आग से इस पर डाली गीली लकड़ियां जल्दी से सूख जाएं। [15]जे. डब्ल्यू. मैक्गर्वे *न्यू कमैन्ट्री ऑफ़ ऐक्ट्स ऑन अपोस्टल्ज़,* vol. 2. [16]वारेन डब्ल्यू. वियर्सबे, *द बाइबल एक्सपोजिशन कमैन्ट्री,* vol. 1. [17]''हौसला रखने'' के लिए यहां स्थानीय शब्द का इस्तेमाल किया जा सकता है। [18]अब मालटा में ख़तरनाक सांप नहीं मिलते (न ही वहां वैसे जंगल हैं जिनका पहले उल्लेख किया गया है), जिससे नास्तिक लोग ''सांप की कहानी'' को पूरी तरह से खारिज कर देते हैं। परन्तु, आज मालटा पृथ्वी के सबसे घनी आबादी वाले इलाकों में गिना जाता है जिसकी जनसंख्या का घनत्व प्रति मील तीन हज़ार लोग है। (हमारे राज्य आरकैन्सास में प्रति मील पैन्तालीस लोग रहते हैं।) यह तथ्य ही उन जंगली जानवरों के अलोप होने के कारण बताने के लिए काफी है। [19]कई टीकाकारों ने सुझाव दिया है कि यदि पौलुस की नज़र कमज़ोर थी (जैसे गलतियों 4:15; 6:11 से लगता है) तो इस कारण भी उसे लकड़ियों में पड़ा सांप दिखाई नहीं दिया होगा। परन्तु मेरे कई ऐसे मित्र हैं जिनकी नज़र ठीक होने के बावजूद भी उनके अनुभव पौलुस की तरह (सांपों ने उन्हें काट

भी दिया) रहे हैं, अर्थात उन्हें सांप दिखाई नहीं दिया। ऐसा किसी के साथ भी हो सकता है। [20]कई नास्तिक लोग यह मानने को तैयार हैं कि सांप की कोई घटना वहां घटी थी, परन्तु सुझाव देते हैं कि सांप ने पौलुस को काटा नहीं। तो फिर वह विषैला सांप पौलुस के हाथ पर चढ़ा कैसे? ये सांप पिण्डी नहीं बनाते और चिपकने के लिए उनके हाथ नहीं होते। वाइपर सांप हाथ पर तभी लटक सकता है यदि उसके दांत मांस में धंस जाएं।

[21]यहां दिया गया ''न्याय'' शब्द यूनानी के शब्द *डाइक* का अनुवाद है। मूर्तिपूजक लोग आम तौर पर उसका अर्थ देवियों या देवताओं की ओर से मिलने वाले दण्ड के रूप में लगा लेते थे (''प्रेरितों के काम, भाग-4'' के पाठ ''आप स-फ-ल-ता को कैसे पढ़ते हैं'' में ''पुनरुत्थान'' पर नोट्स देखिए)। टापू के लोग सम्भवत: यूनानी देवी डायिक या फीनीके में उसके प्रतिरूप को मान रहे थे। [22]शायद पौलुस की कलाई पर फिर से बेड़ी बन्धी हुई थी (जो समुद्र में पौलुस के छलांग लगाने के समय उतार दी गई होगी)। परन्तु, सम्भवत: टापू वासियों को दूसरे लोगों को देखकर पता चला कि पौलुस एक कैदी है। परन्तु, उन्हें यह पता नहीं था कि उसे किस अपराध के लिए पकड़ा गया था। [23]सम्भवत: वे कई प्राचीन लोगों के बारे में जानते थे जिन्हें समुद्र में मरने से देवताओं ने किसी प्रकार बचा लिया था। एक गाथा के अनुसार, देवताओं ने एक आदमी को सांप से कटवाकर मार डाला था। [24]बिना हानि के ''सापों को उठाने'' की प्रतिज्ञा के पूरा होने का केवल यही एक उदाहरण है और यह भी जानबूझकर नहीं बल्कि अचानक हुआ था। आज के सांप उठाने वाले लोग पवित्र शास्त्र की गलत व्याख्या करके परमेश्वर की परीक्षा ले रहे हैं (मत्ती 4:7) और अपनी देहों को अनावश्यक जोखिमों में डालते हैं (1 कुरिन्थियों 3:17)। [25]यूनानी शब्द का अनुवाद ''सूजना'' लूका द्वारा प्रयुक्त एक और मेडिकल टर्म थी। ''किसी जहरीले सांप के आक्रमण करने पर, उसका विष खून में प्रवेश कर सूक्ष्म नाड़ियों को नष्ट कर देता है, जिससे बहुत अधिक रक्तस्राव हो जाता है। प्रभावित अंग सूजने लगता है और, यदि विष काफी शक्तिशाली हो, तो प्रभावित व्यक्ति उसी समय मर भी सकता है'' (साइमन जे. किस्टमेकर, *न्यू टैस्टामेन्ट कमैन्ट्री: एक्सपोज़िशन ऑफ द ऐक्ट्स ऑफ द अपोस्टल्ज़*)। [26]कई नास्तिक लोग मानते हैं कि पौलुस को सांप ने काटा तो था परन्तु सांप जहरीला नहीं था। टापू के निवासियों ने जो अपने इलाके के बारे में जानते थे, जान लिया कि वह सांप किसी ख़तरनाक प्रजाति का था। जब तक किसी ने यह ठाना न हो कि बाइबल के आश्चर्यकर्मों पर विश्वास नहीं करना है तब तक यह निष्कर्ष लेने से इन्कार करने का कोई आधार नहीं है? [27]लुस्त्रा में, लोगों को पहले लगा कि पौलुस और बरनबास देवता हैं और फिर उन्होंने पौलुस को मारने की कोशिश की (''प्रेरितों के काम, भाग-3'' के पृष्ठ 88 से ''पूजा से गालियों तक'' पाठ में देखिए)। [28]मूलत: यूनानी में ''टापू के प्रथम [पुरुष] है।'' [29]हम नहीं जानते कि लूका ''हमें'' शब्द में कितनों को शामिल कर रहा था। बेशक, सम्भव है कि दूसरे प्रबन्ध होने तक जहाज़ से बचकर आने वाले अधिकतर या सभी लोगों को पुबलियुस अपनी भूमि में विभिन्न जगहों पर रख सकता था। [30]तीन दिन तक पुबलियुस के मेहमानों के रूप में रहने का उल्लेख करने के बाद लूका ने नहीं बताया कि टापू पर बिताए उनके बाकी तीन महीनों के दौरान क्या हुआ। स्पष्टत: उस समय के बाद पौलुस और बाकी लोगों के लिए कोई स्थाई कमरा ढूंढ़ा गया होगा और उसके बाद वे ''अतिथि'' बनकर नहीं रहे।

[31]कई बार सहायता देने वाले के साथ सम्बन्ध बनाने या मजबूत करने के लिए हमें भी सहायता स्वीकार कर लेनी चाहिए। [32]यहां पर यूनानी शब्द (*ड्यूसेन्ट्रिया*) वही शब्द है जिससे हमें पेचिश के लिए अंग्रेज़ी शब्द ''डाइसेन्ट्री'' मिला है। लूका द्वारा डॉक्टरी में इस्तेमाल होने वाले शब्दों के इस्तेमल का यहां एक और उदाहरण है। उस राज्यपाल के पिता को मालटा ज्वर ही था जो कमज़ोर करने वाली दो से तीन वर्षों तक रहने वाली बीमारी थी। (1887 में यह खोज हुई कि मालटा ज्वर वहां की बकरियों के दूध में पाए जाने वाले सूक्ष्म जीव के कारण होता है। संसार के विभिन्न भागों में इस रोग को विभिन्न नामों से जाना जाता है। इसका वैज्ञानिक नाम ब्रूसेलोसिस है। इस रोग में ''कम्पकम्पी, बुखार, भार कम होना, जोड़ों तथा मांसपेशियों का दर्द, और हृदय बढ़ जाता है। मस्तिष्क ज्वर जैसे रोग भी बढ़ सकते हैं'' [जे. मिचल एस. डिक्सन की *ग्रोलियर मल्टीमीडिया एन्साइक्लोपीडिया* (1995), s.v. ''ब्रूसेलोसिस,'']।) [33]सुसमाचार के वृत्तांतों के बाहर केवल यहीं पर छूकर चंगाई दी गई; शायद यहां पर कोमलता का सुझाव मिलता है (''प्रेरितों के काम,

भाग-3'' में ''हाथ रखना'' पर अतिरिक्त लेख देखिए)। एक बात तो तय है: आज के तथाकथित ''चंगाई देने वालों'' की तरह नये नियम के चंगाई देने वाले किसी भी व्यक्ति ने लोगों के सिर पर नहीं *मारा* था। [34]यीशु द्वारा पतरस की सास को चंगा करने की ख़बर फैलने के बाद कफरनहूम में हुई चंगाई सभा का स्मरण करने वाली बात थी (मरकुस 1; लूका 4)। मालटा में होने वाली चंगाइयां अन्तिम चंगाइयों में से हैं, अर्थात यदि अन्तिम नहीं तो पौलुस द्वारा की गई अन्तिम तो हैं ही। वारेन डब्ल्यू. वियर्सबे ने कहा, ''लगता है कि आश्चर्यकर्मों और चंगाई के दान धीरे-धीरे पौलुस की सेवकाई में समाप्त हो गए। परमेश्वर ने अन्यजातियों में गवाही देने के लिए पौलुस को इफिसुस में 'विशेष आश्चर्यकर्म' दिए (प्रेरितों 19); और यहां मालटा में उसने पौलुस को चंगाई करने की शक्ति दी। फिर भी, दो साल बाद रोम से लिखते समय पौलुस ने बताया कि इपाफ्रोदितुस बीमार था बल्कि मरने को था (फिलिप्पियों 2:25-30); 2 तीमुथियुस 4:20 में उसने लिखा कि उसे त्रुफिमुस को मिलेतुस में बीमार छोड़ना पड़ा'' (*वियर्सबे'ज़ एक्सपोज़िट्री आउटलान्ज़ ऑन द न्यू टैस्टामेन्ट*)। [35]फ्रिट्ज़ रीनेकर, *ए लिंगुइस्टिक की टू द ग्रीक न्यू टैस्टामेन्ट,* ed. क्लयोन एल. रोजर्स Jr. [36]पौलुस को उन लोगों के साथ शुरुआत करने का अवसर मिला जिन्होंने जहाज में उसके नेतृत्व को मान लिया था। उसे टापू के निवासियों के साथ भी शुरुआत करने का अवसर मिला: उनका विश्व दर्शन मूर्तिपूजक था, परन्तु फिर यह मानने के साथ-साथ कि दुष्ट को उसका दण्ड मिलना चाहिए वे अभी भी इस धारणा पर विश्वास करते थे कि कुछ बातें सही हैं और कुछ गलत (आयत 4)। वह उन्हें उस उद्धारकर्त्ता के बारे में बताकर जो हमें न्याय से बचा सकता है उनकी धारणाओं से निकाल लाया।[37] सुसमाचार के सारे वृत्तांतों और प्रेरितों के काम में, चंगाई प्रचार से अलग नहीं थी। आश्चर्यकर्मों से यह प्रमाणित हुआ कि बोलने वाले परमेश्वर के भेजे हुए थे (चाहे यीशु हो या उसके प्रेरित) जिन्होंने बाद में संदेश दिया। [38]कई लेखक निष्कर्ष निकालते हैं कि मालटा के टापू पर पौलुस ने किसी को मसीही नहीं बनाया ''क्योंकि लूका ने किसी का उल्लेख नहीं किया।'' परन्तु, लूका ने रोम में भी किसी के मसीही बनने का उल्लेख नहीं किया, परन्तु हमें दूसरे लोगों के लेखों से पता चलता है कि राजधानी नगर में बहुत से लोग मसीही बने थे (फिलिप्पियों 1:12, 13; 4:22; फिलेमोन 10)। लूका ने मालटा टापू पर या रोम में हुए मन परिवर्तनों का उल्लेख इसलिए नहीं किया होगा क्योंकि यह उसका उद्देश्य नहीं था। [39]''जीवन के सागर की जल यात्रा'' पाठ में प्रेरितों 27:1 पर नोट्स देखिए। [40]यह किसी की प्रशन्सा के लिए दिया जाने वाला धन है। मूल शास्त्र में मूलत: ''कई सम्मानों से [उन्होंने] हमें सम्मानित किया'' है। कई बार (आम तौर पर नहीं) अनुवादित शब्द ''आदर'' का अर्थ आर्थिक सहायता के रूप में लिया जाता है (देखिए 1 तीमुथियुस 5:17)।

[41]यहां पर दिए गए प्वाइंटों पर आवश्यकता के अनुसार फिर से विचार किया जा सकता है। [42]उद्धार पाने के लिए किसी गैर मसीही को समझाने और परमेश्वर के भटके हुए बालक को सुधारने के लिए आवश्यक बातें बताने का यह अच्छा समय है।

प्रभु की कलीसिया का सदस्य बनना

प्रश्न: पहली शताब्दी में लोग प्रभु की कलीसिया के सदस्य कैसे बनते थे और आज *हम* उसकी कलीसिया के सदस्य कैसे बन सकते हैं?

उत्तर: कलीसिया मसीह के लहू से उद्धार पाए हुए लोगों की देह है। इसलिए, इसमें वही लोग शामिल हैं जो पापी, खोए हुए थे, जिन्होंने परमेश्वर के अनुग्रह को अपना लिया है। फिर तो, बच्चों को, कलीसिया की कोई आवश्यकता ही नहीं है। बालक और छोटे बच्चे *सुरक्षित* हैं; उन्हें *उद्धार* की कोई आवश्यकता नहीं है (मत्ती 18:3)। परन्तु जब कोई इतना बड़ा हो जाए कि उसे पहचान हो जाए कि पाप परमेश्वर के साथ विद्रोह है, तो वह पाप करता है (रोमियों 3:23) और उसे उद्धार की आवश्यकता पड़ती है। यीशु मसीह पापी को बचाने के लिए ही मरा (1 कुरिन्थियों 15:3), परन्तु जो कुछ मसीह ने किया है उसका लाभ लेने के लिए एक पापी को क्या करना चाहिए? पहले तो उसे मसीह के बारे में जानना चाहिए (यूहन्ना 6:45; मत्ती 28:18-20)। इससे उसके हृदय में मसीह में विश्वास (रोमियों 10:17) और भरोसा उत्पन्न होगा जिससे वह दूसरों के सामने यीशु का अंगीकार कर सकता है (रोमियों 10:9, 10)। इस विश्वास से उसके मन में पश्चात्ताप (प्रेरितों 2:37, 38) उत्पन्न होना चाहिए जो उसे बपतिस्मे की ओर ले जाता है (मरकुस 16:16), जो कि पानी में (प्रेरितों 10:47) गाड़े जाना है (रोमियों 6:3, 4)। कलीसिया की स्थापना के दिन, जिन्होंने यह सब किया, उन्हें प्रभु ने अपनी कलीसिया में मिला लिया (प्रेरितों 2:38, 41, 47)। 1 कुरिन्थियों 12:13 में, पौलुस ज़ोर देकर कहता है कि जो लोग आत्मा की शिक्षाओं की अगुआई में चलते हैं उन्हें ''एक देह में बपतिस्मा'' दिया जाता है, जो कि कलीसिया है (कुलुस्सियों 1:18)। कलीसिया उद्धार पाए हुए लोगों की देह है, इसलिए जिससे वह व्यक्ति उस कलीसिया का सदस्य बनता है वही उसका उद्धार करता है, और जिससे उसका उद्धार होता है वही उसे कलीसिया का सदस्य भी बनाता है!

पौलुस की रोम यात्रा

यहूदी भीड़ से बचाकर (प्रेरितों 21), रोमी सिपाहियों ने पौलुस को ❶यरूशलेम में हिरासत में रखा और ❷ कैसरिया में ले गए। वहां, फेलिक्स ने पौलुस का मुकदमा तो सुना पर उस पर कोई फैसला नहीं दिया (प्रेरितों 24)। दो साल बाद, जब फेस्तुस फेलिक्स की जगह आया, तो दोबारा पौलुस ने अपना मुकदमा उसके सामने रखा (25:1-10)। जब फेस्तुस ने पौलुस को यहूदियों के हाथ सौंपने का निर्णय लिया तो पौलुस ने कैसर की दुहाई दी (25:11)। रोम ले जाने की प्रतीक्षा करते, उसे अग्रिप्पा द्वितीय के पास मसीह के लिए कैद होने के बारे में बात करने का अवसर मिल गया (प्रेरितों 26)।

पौलुस और उसके साथी (जिसमें लूका भी था) सैनिक सुरक्षा में रोम से ❸ सैदा के लिए निकल पड़े। उन्होंने लूसिया के मूरा में आकर जहाज़ बदले (27:5, 6)। खराब मौसम के कारण, जहाज़ ❹क्रेते के टापू पर शुभलंगरबारी पहुंच गया, जहां पर इसके यात्रियों ने सितम्बर तक आड़ ली अर्थात असुरक्षित यात्रा का मौसम खत्म होने तक। कौदा नामक टापू का आश्रय लेकर उन्होंने सर्दियों के ठहराव के लिए फीनीके पहुंचने का प्रयास किया (27:16) परन्तु समुद्र में बह गए (27:17)। ❺ जहाज़ का सामान नीचे फैंकने के बाद (27:18,19), उन्होंने अन्ततः ❻ मालटा के टापू पर जहाज़ लगा दिया (27:41)। जहाज़ तो नष्ट हो चुका था, परन्तु उसमें बैठे सभी लोग बच गए थे (27:44)। मालटा टापू पर, पौलुस को एक सांप के काटने से कुछ नहीं हुआ (28:3-5) और वहां पर वह अगले तीन महीने तक बीमारों को चंगा करता रहा (28:8-11)। मौसम ठीक होने के बाद, ये लोग एक नया जहाज़ लेकर सुरकूसा की ओर चल दिये (28:12)। तीन दिनों के बाद वे रेजियुम और ❼ पुतियुली की ओर गए जो रोमी साम्राज्य के बड़े पोतों में से एक था। पौलुस और उसके साथियों को एक सप्ताह तक स्थानीय मसीहियों के साथ रहने की अनुमति मिली थी। फिर वे रोम तक सौ मील जाने को तैयार थे। ❽ रास्ते में होने वाले स्वागत से पौलुस उत्साहित था। ❾ रोम में पौलुस दो वर्षों तक किराए के एक मकान में बन्दी रहा। उस दौरान, उसे मेहमानों से मिलने और प्रचार करने की काफ़ी छूट थी (28:30, 31)।

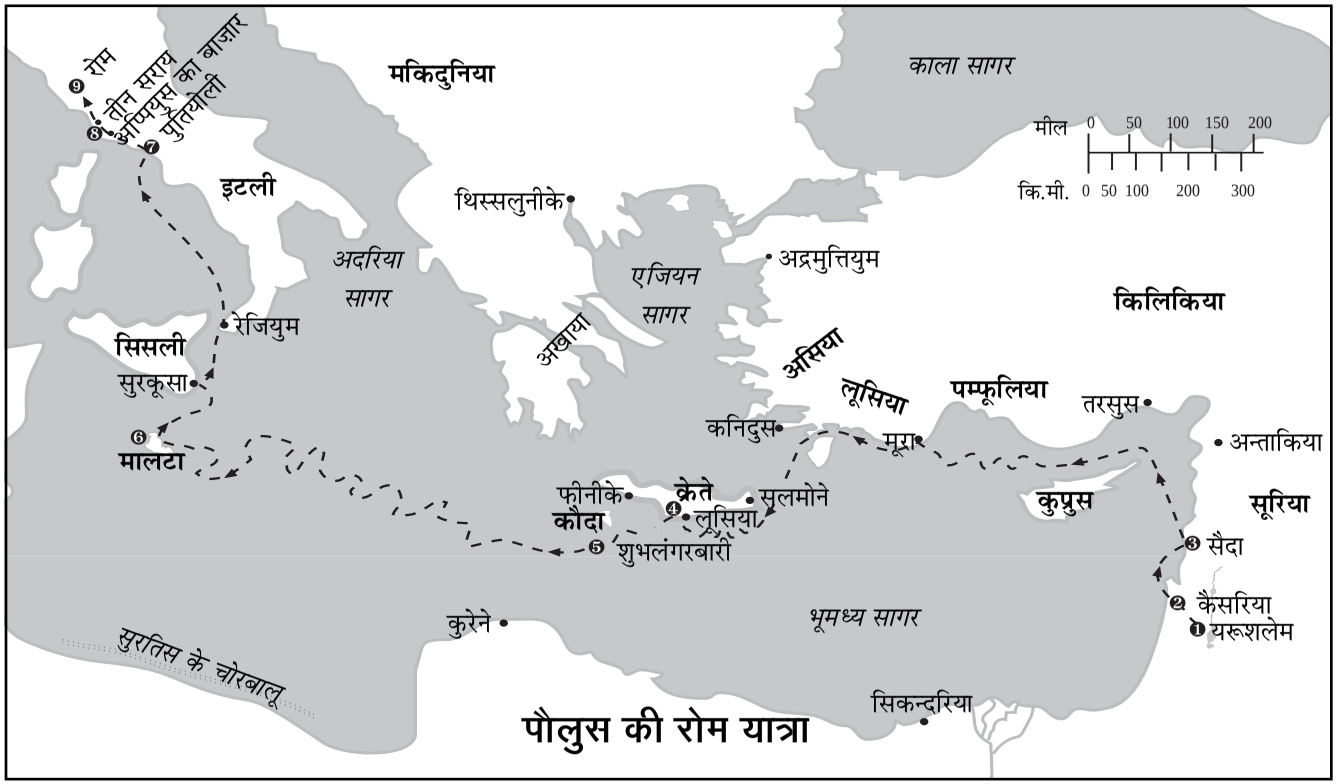

मकिदुनिया
काला सागर
मील 0 50 100 150 200
कि.मी. 0 50 100 200 300
रोम
तीन सराय
अप्पियुस का बाज़ार
पुतियोली
इटली
थिस्सलुनीके
अद्रमुत्तियुम
किलिकिया
अदरिया सागर
एजियन सागर
रेजियुम
सिसली
अखाया
आसिया
सुरकूसा
लूसिया
पम्फूलिया
तरसुस
कनिदुस
मूरा
अन्ताकिया
मालटा
फीनीके
क्रेते
सलमोने
कुप्रुस
सूरिया
लूसिया
कौदा
शुभलंगरबारी
सैदा
कैसरिया
यरूशलेम
कुरेने
भूमध्य सागर
सुरतिस के चोरबालू
सिकन्दरिया

पौलुस की रोम यात्रा

मसीही लोगों की उदारता से ट्रुथ फ़ॉर टुडे वर्ल्ड मिशन स्कूल बिना कोई कीमत लिए ये पुस्तकें आपको उपलब्ध करवा सका है। अपनी mailing list को अपडेट करने के लिए हमें आपसे निम्न जानकारी चाहिए।

यह पुष्टि करने के लिए कि आपकी जानकारी अभी भी सही है, कृपया हमें साल में कम से कम एक बार अवश्य लिखें कि क्या आपको यह सामग्री लगातार सही पते पर मिल रही है और आपके लिए कैसे सहायक हो रही है। आपकी सेवकाई में परमेश्वर आपको आशीष दे।

एक पर टिक करें: ☐ पुरुष ☐ स्त्री

(नोट: सम्भव हो तो पता अंग्रेज़ी के बड़े अक्षरों में लिखें)
नाम: _____
पूरा पता: _____
_____
_____ PIN _____

पुराना पता (पता बदलने की स्थिति में): _____
_____
_____
_____ PIN _____

ई-मेल पता: _____
कलीसिया का नाम: _____
स्थान : _____
प्रचारक का नाम: _____

जिस मण्डली में आप आराधना करते हैं, वहां आपकी सेवा क्या है?
☐ प्रचारक ☐ सदस्य
☐ बाइबल क्लास टीचर ☐ सदस्यता नहीं

क्या आपको ट्रुथ फ़ॉर टुड़े वर्ल्ड मिशन स्कूल का साहित्य लगातार मिल रहा है? (एक पर टिक करें):
☐ नहीं
☐ हां, डाक से
☐ हां, श्री _____ के पास से।

आप किस भाषा में पुस्तकें पाना चाहेंगे? (केवल एक ही टिक करें):
☐ हिन्दी ☐ तमिल ☐ तेलुगू ☐ अंग्रेज़ी

आप इस सामग्री का इस्तेमाल कैसे करते हैं/करेंगे? _____
_____

यदि आप ऐसे व्यक्तियों को जानते हों जो इस सामग्री को लगातार प्राप्त करना चाहते हैं, तो कृपया इस फार्म की कापी करवाकर उनके नाम से यह फार्म Truth for Today, P.O. Box 44, Chandigarh - 160017 के पते पर भेज दें।